Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

दीन बन्धु सर छोटूराम

वर्ष 17 अंक 06 30 जून 2017 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

राष्ट्र की यही पुकार-शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

'कुली, गुल्ली, जुल्ली' यानि रोटी कपड़ा और मकान, इंसान की आधारभूत आवश्यकताएं हैं। इन्हे जुटाने हेतु अच्छा स्वास्थ्य, अच्छी शिक्षा और रोजगार की नितांत जरूरत है। गत ७० वर्षों से जनता को मिले हैं केवल झांसे, नारे और सांत्वना संदेश। कभी 'बहुजन हिताए बहुजन सुखाए' तो 'कभी सबका विकास सबका साथ' लेकिन आज मेरे लिए, आजकल आपके लिए तब भी अगर मेरे-मेरे खानदान या जात बिरादरी से बचा तो आपको मिल जाएगा। वास्तव में भारत एक कृषि प्रधान देश कहलाता है लेकिन किसान को खुद की रोटी नहीं है परंतु मेहनत मशक्कत से पैदा अनाज को ले जाने वाले कोई और ही हैं। कहने को अन्नदाता लेकिन स्वंय का पेट खाली ।

आज देश की सर्वोपरि समस्या बेरोजगारी की है लेकिन आज किसान का सारा परिवार खेत में जुटा है। उसका रोजगार मौसम पर आधारित है। मजदूर के नाम पर नरेगा है जो २६० से २६५ दिन रोजगार की गारंटी देता है लेकिन जिसके खेत पर वह निर्भर है उसके नाम पर कुछ नहीं। कृषि से जुड़े सभी रोजगार धंधे भी वर्षभर नहीं होते, वे भी सीजन पर आधारित है। दिन प्रति दिन आबादी बढ़ रही है। कृषि उत्पाद की कीमत भी बढ़ रही है, किसान की अथक मेहनत और बढ़ा हुआ उत्पादन इस आबादी को रोजी-रोटी देने में पूरा नहीं कर पा रहा है। वर्ष १९५१ में १०० मिलीयन लोग कृषि पर आधारित धंधों में कार्यरत थे। वर्ष १९९१ तक १६० मिलीयन हो गए। इसीलिए गांव से शहर की ओर पलायन हो रहा है। शहरी उद्योग धंधे इस भीड़ को खपाने में सक्षम नहीं है। उद्योगपतियों ने मशीनीकरण समाधान दिया, जिससे रोजगार की समस्या और बढ़ गई 1योंकि अनेकों मजदूरों का काम एक मशीन ने कर दिया जिसमें उद्योगपति का कम लागत से अधिक उत्पादन होता है। तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देना अति आवश्यक है ताकि लोगों को उद्योग की जरूरतों के अनुसार तैयार किया जा सके। इससे रोजगार के मनचाहे साधन जुटाएं जा सकेगें और बेराजगारी से निपटने में सहायता मिलेगी। भारतीय डाक्टर और इंजीनियर दूसरे देशों में पलायन करते हैं, जबकि यहां उनकी जरूरत है। वहां उन्हे अच्छे अवसर भी मिल रहे हैं लेकिन भारत में पहले से ही कम संसाधनों के बलबूते ऐसी शिक्षा ग्रहण करने वाले नव युवाओं की एक कमी अखर रही है। आज नासा जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्था में ७० प्रतिशत से भी अधिक भारतीय इंजीनियर और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय डाक्टर कार्यरत हैं। अगर इस संपदा को ठीक से खपाया जाए तो वे भारत को नई बुलंदियों की ओर ले जा सकते हैं।

यह हमारे कम पढ़े-लिखे और राष्ट्र पर राज करने वालों की दूर अंदेशी में कमी के कारण हो रहा है। वर्ष १९६२ में केवल ५.९ लाख पढ़े-लिखे बेरोजगार थे जो १९९४ तक २३०.५० लाख हो गए। पहली योजना में ७.१ मिलियन बेरोजगार दूसरी में ९.६ मिलीयन और तीसरी योजना के अंत तक २३ मिलियन बेरोजगार हो गए। रोजगार कार्यालयों में नौकरी तलाशने वालों की लंबी कतारे दिन-प्रति-दिन बढ़ रहीं हैं। वर्ष १९९६ की ३६८.९ लाख की सं2या १९९७ अप्रैल तक ७.५ मिलियन तक पहुंच गई।

बेरोजगारी वर्ष २०१३-१४ में ४.९ से बढ़कर २०१५-१६ तक ५ प्रतिशत तक बढ़ गई। हाल ही की रिपोर्ट के अनुसार १.५२ लाख कैजुअल मजदूर रोजगार खो चुके हैं। सरकारी स्कूलों की कमी के साथ-साथ शिक्षकों की भी कमी। हाल ही में पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की १०वीं के नतीजे किसी से छुपे नहीं हैं, जिसमें परिणाम तो शर्मनाक है। माना अध्यापकों की कमी है और ४०० विद्यार्थियों पर केवल एक अध्यापक है। आज स्कूल का बस्ता बच्चे की कमर तोड़ रहा है क्योंकि इन किताबों में निजी स्कूल कमीशन कमाता है। बच्चे को हर वस्तु स्कूल देता है, जिससे मोटी कमाई करता है। आज टयूशन फ्क्र का विषय है। आज टयूशन पूर्ण उद्योग का रूप ले चुका है। सरकारी स्कूलों में ९.९५ प्रतिशत प्राईमरी स्कूलों में केवल एक प्रतिशत अध्यापक है तथा विद्यार्थी २०.७२ लाख हैं। ऐसे १८००५ स्कूल देहात में हैं तथा अध्यापक एक लाख से ऊपर हैं। नीजि स्कूल अभिभावकों का जमकर शोषण करते हैं क्योंकि उनके पास दूसरा कोई चारा नहीं है।

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग का वास होता है, कहा भी जाता है कि पहला सुख निरोगी काया। यही हमारी धारणा युग-युगांतर से चली आ रही है। इसीलिए खेलों में बहुत महत्ता थी। आज भारत अपनी

शेष पेज-2 पर

शेष पेज–1

परंपरा को भूल चुका है क्योंकि खेलों में भी राजनीतिकरण हो गया है। इसीलिए हमारे पारंपरिक खेल दिन प्रतिदिन प्राय लुप्त हो रहे हैं। बच्चों के लिए खेल अनिवार्य हों ताकि वे स्वस्थ रह सकें। आज खेल खत्म हो रहे हैं, हम टी वी, मोबाईल व इंटरनेट जैसी सुविधाओं से जुड़े हुए हैं। खान-पान में हाईजीन, रिफाईंड तथा साफ सुथरे शोधित खाने और जंक फूड पर आ गए। इस जीवन शैली ने बीमारियां पैदा की। यहां तक कि बढ़ रही आबादी के लिए खाना भी पर्याप्त नहीं है इसलिए रासायनिक कृषि एवं कृत्रिम तरीकों और रसायनों से उत्पादित खाद्य पदार्थ स्वास्थ्य पर भारी पड़ रहे हैं।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने रासायनिक दवाईयां तैयार कर दी और जन स्वास्थ्य से खिलवाड़ शुरू कर दिया। नई-नई बीमारियां इजाद हुई क्योंकि अधिक दवाई उत्पादन और उपभोग से ही उनका लाभ है। उन्होने मिलकर बीमारी के स्टैंडर्ड कम कर दिए जैसे भारतीय स्वास्थ्य जीवन शैली में शुगर जैसी बीमारी का नाम निशान नहीं था। आलसी और आधुनिक जीवन शैली से ऐसी बीमारी आई जिसका स्टैंडर्ड कभी 140 तक ठीक था उसे अमेरिकन दवाई निर्माताओं ने विश्व स्वास्थ्य की मदद से इसको 100 तथा बाद में 80 पर कर दिया ताकि उनकी दवाई अधिक बिकें। अब बहुत से भारतीय इसके शिकार हो गए हैं और इस दवाई के साईड इफैक्ट भी हुए, जिससे उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियां शुरू हो गई। एक श्रंखला दवाई की खपत बढ गई। हाल में यह भी सिद्ध हो गया है कि कोलेस्ट्रोल की शरीर को आवश्यकता है और इसका उत्पादन लीवर करता है। अगर कोलेस्ट्रोल कम करेगें तो लीवर को अधिक कार्य करना पड़ेगा। अब सिद्ध हो गया है कि इससे हाट अटैक नहीं होता। अतः एच डी एल और एल डी एल की अवधारणा भ्रामक है।

विश्व स्वास्थ्य अनुसंधानकर्ताओं ने बताया कि भारत के 60 प्रतिशत लोक हृदय रोगों से पीड़ित हैं। अधिकतर पुरूष 50 वर्ष की आयु से पूर्व ही इस बीमारी से ग्रस्त हो जाते हैं। कैंसर की बीमारी भी कई प्रकार की है। भारत में स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं की बेहद कमी है। अकेले हरियाणा में औसतन 14 व्यक्ति प्रतिदिन दुर्घनाग्रस्त हो जाते हैं। इसमें अधिक मृत्यु हाईवे पर सुविधाओं की कमी से हो रही है। एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में जी.डी.पी. का 1.15 प्रतिशत हिस्सा सरकार द्वारा स्वास्थ्य संरक्षण के लिए लगाया जाता है जोकि पूरे विश्व में सबसे कम है। यह भी देखा गया है कि 70 प्रतिशत रोगी नीजि हस्पतालों में उपचार के लिए जाते हैं क्योंकि सरकारी औषधालयों व हस्पताओं में डाक्टरों की बेहद कमी है और डा1टर हैं तो दवाईयां नहीं हैं। इसी कारणवश यानि कि स्वास्थ्य एवं ईलाज पर अधिक खर्च होने के कारण 6 करोड़ 20 लाख लोग गरीब हो चुके हैं। मोटापा भी कई बीमारियों की जड़ है, जिसके मुख्य कारण कसरत कम और जंकफूड है। यह बीमारी बच्चों और महिलाओं में अधिक है। बहुत सी बीमारियां स्वस्थ जीवन शैली और कुदरती खानों से ही उपचार हो सकती हैं। हाल ही में आरगैनिक खेती शुरू हो गई है क्योंकि रसायनों के प्रयोग से फसलों की बढ़ोतरी तो हो गई लेकिन गुणवता बीमारीयुक्त हो गई।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 1983 में संसद में पेश हुई थी तथा 2002 में सुधार हुए और 2017 में एक ड्राफ्ट जन प्रतिभागिता हेतु रिलीज कर दिया गया है। विभिन्न राज्यों में मापदंड और परिणाम भी अलग हैं। केरल में बाल मृत्यु दर 12 प्रति हजार है जबकि आसाम में 56 है। वर्ष 2014 में जी डी पी का 4.7 प्रतिशत खर्च स्वास्थ्य सेवाओं पर था। यह तथ्य विश्व बैंक द्वारा जारी किए गए हैं, जो कि विशेष ध्यानार्थ है - कुपोषण, बाल मृत्यु, बीमारी, जन सुविधाओं का अभाव, गंदगी, साफ पीने के पानी की कमी आदि मुख्य कारण हैं। स्वस्थ खान-पान, जीवनशैली और साफ सुथरे आवास से कई आपदाओं से निपटा जा सकता है, जिस पर कोई खर्च भी नहीं है, मात्र जागरूकता फैलानी है। अतः देश में प्रारंभिक स्वास्थ्य देखरेख की योजनाएं शुरू करने की तुरंत आवश्यकता है। आज से लगभग 2 वर्ष पूर्व दिल्ली में 'मोहल्ला चिकित्सा सेवा केंद्र' खोले गए और आम जनता में इनकी सराहना की जा रही है। इसी प्रकार मई 2017 में 'ग्रेटर हैदराबाद 6युनिसीपल कार्पोरेशन' में 1500 बस्ती दवाखाना केंद्र खोले गए जिनके काम काज का अभी तक अवलोकन नहीं किया गया। पंजाब सरकार ने भी वर्तमान सत्र में 'मोहल्ला चिकित्सा केंद्र' खोलने की घोषणा की जो कि एक सराहनीय कदम है लेकिन हरियाणा में अभी तक स्वास्थ्य विभाग ने इस संदर्भ में कोई सराहनीय कदम नहीं उठाया है। इस प्रांत में सरकार के स्वास्थ्य विभाग की नीति अभी तक केवल अधिकारियों व कर्मियों की अदला-बदली करने, सस्पैंड व बर्खास्त करने की रही है व जन स्वास्थ्य कल्याण के लिए कोई कारगर कदम नहीं उठाए गए।

आज के तेजी से बदल रहे परिवेश में शिक्षा, रोजगार व स्वास्थ्य जैसी तेजी से बढ़ रही समस्याओं को समय रहते नियंत्रित करना आवश्यक है। इस संदर्भ में राष्ट्र के सभी शिक्षाविदों, बुद्धिजीवी वर्ग, समाज सेवी संस्थाओं व विशेषकर नेतागण को जाति, वर्ग व दल से हटकर कारगर प्रयास करने होगें। इसके साथ ही केंद्रीय व समस्त राज्य सरकारों को भी राष्ट्रहित के इन महत्वपूर्ण मद्दों पर चिंतन करके अधिक प्रभावी ढंग से प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि हर क्षे0त्र में विकास की ओर अग्रसर इस महान राष्ट्र की गति को बरकरार रखा जा सके।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस., सेवानिवृत,
प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

तीन विश्वास पात्र मित्र होते हैं – वृद्धा पत्नी, वृद्ध कुत्ता, नकद धन – फ्रेंकलिन

चौ. छोटूराम की अंतिम जनसभा

– सूरजभान दहिया

1940 का दशक भारतीय इतिहास का अति महत्वपूर्ण एवं पीड़ादायक होने की ओर अग्रसर था। अंग्रेज शासकों के कूटनीतिक गठबंधन से प्रोत्साहित मोहम्मद अलि जिन्ना तथा उनकी मुस्लिम लीग ने देश भर में साम्प्रदायिक अग्नि भड़काकर देश के बंटवारे का आंदोलन तेज कर रखा था। इधार कांग्रेस के नेताओं की कायर एवं समझौतावादी नरमनीति इस ज्वाला में घी का काम करती जा रही थी। पंजाब मुस्लिम साम्प्रदायिकता का ऐतिहासिक गढ़ होने जा रहा था। सबकी नजर पंजाब पर लगी थी। महाभारत युद्ध की भांति इस युद्ध का निर्णय भी पंजाब की जमीन में होना था। परंतु इस गढ़ पर चौधरी छोटूराम जैसे महारथी का आधिपत्य था। जो सांप्रदायिक समस्या देश में महात्मा गांधी, नेहरू जी जैसे नेताओं की सूझबूझ को चुनौती दे रही थी उसका पंजाब में चौधरी ने क्रियात्मक समाधान कर दिखाया था। वहां के हिन्दू, सिख, मुसलमान बहुमत को आर्थिक हितों के आधार पर एकसूत्र में बांध लिया था। बार–बार टक्करे मारकर भी जिन्ना इस गढ़ के फाटक में पैर न रख सके और दिल तोड़कर बड़ी जिल्लत के साथ वापस बंबई मुड़ते रहे लाहौर से प्रकाशित ट्रिब्यून में एक कार्टून छपा था– 'रहबरे आजम ने कायदे आजम को बंबई का रास्ता दिखा दिया'

सभी संस्थाओं, आंदोलनों, नारों अथवा व्यक्तियों को ये किसान मसीहा, दीनबंधु चौ. छोटूराम केवल किसान–हित की व्यावहारिक कसौटी पर ही परखते थे। इसलिये उन्होंने जो कुछ सोचा, वही कहा और करके दिखाया। जीवन के अंतिम वर्षों में तो भारत के राष्ट्रीय क्षितिज पर यह नक्षत्र बड़े तेज के साथ शिखरारूथ हुआ। जिन्ना के कमजोर पड़ते गांधी जी को चौ. छोटूराम ने शिमला से 15 अगस्त 1944 को एक पत्र लिखा था और उन्हें अवगत कराया था कि पंजाब में हमने जिन्ना को शून्य बनाकर रखा है अतएव कांग्रेस पार्टी उन्हें इसी नजरिये से देखे।

कदाचित कांग्रेस पार्टी जिन्ना के समक्ष घुटने टेक चुकी थी अतेव चौ. छोटूराम ने स्वयं जिन्ना को अपनी जनशक्ति से निपटने का संकल्प लिया। इस प्रयोजन हेतु नवंबर, 1944 के आरंभ में उन्होंने भंग में एक विशाल सभा को संबोधित किया। इस ऐतिहासिक संबोधन में उन्होंने कहा– ''जो कौम अपने इतिहास को भूल जाती है, इतिहास उसे ही भूला देता है। मैंने हिन्दू, मुस्लिम व सिख किसान को एकजूट किया है और किसान को आर्थिक आजादी दिलवाई है। किसानों की ज्यादा नफरी जाट कौम से ताल्लुक रखती है। जाटो ने कभी अपने लिए निर्णायक संघर्ष नहीं किया भले उन्होंने देश और दूसरों के लिए अनेक कुरबानियां दी हैं। मुस्लिम लीग के जिन्ना किसान एकता को तोड़ने पर उतारू हैं और मैं उसके इस नापाक इरादे को अंजाम नहीं देने दूंगा। धार्मिक उन्माद किसानशक्ति को काफी क्षति पहुंचा देगा, पर इस प्रकार की हरकते हमें यह सीख दे रही हैं कि हमें विघटनकारी शक्तियों से सावधान होना होगा और ऐसी शक्तियों से एकजुट होकर लड़ना होगा। हमें अपने हित की लड़ाई खुद लड़नी होगी।

मेरे किसान भाइयों! मैंने जन्म से ही अपने घर और किसान के अन्य घरों में गरीबी और शोषण का कहर देखा है। किसान की हिम्मत नहीं होती थी कि वह सेठ–साहूकारों के बेजाह शोषण के खिलाफ आवाज उठायें। सारा परिवार इसकी मार में रहता था। मुझे याद है कि मैं 13–14 साल का था, मुझे बाजरे की रखवाली को खेत में भेजा गया। मैं अपनी पढ़ाई में मग्न था और चिड़ियां बाजरा खा रही थी। अचानक बा पके आने पर इस पर मुझे मार पड़ी, साथ के खेत मे चाचाने मेरी हिमायत ली। फिर मुझे थोड़ा सा हौशला हुआ और बाप को कह दिया– 'यो बाजरा तै बनिया कै जाग्या, घर में भूख ही रहगी' बाबू समझता था, पर कायदे–कानून के आगे लाचार था।

मैं वकालत करने के बाद 1912 में रोहतक आया और कचहरी में बैठ गया– किसान के कर्जे का दर्द व माजरा समझा। छोटे–छोटे कर्जे पर किसान की जमीन व घर कुर्क होते देखा। कोर्ट के अन्यय होते नही देखा गया और आवाज उठा दी– न्याय नहीं अंधेर है कोर्टो में। गोरे–काले साहूकारों से गठजोड़ करके किसानों के हाड–मॉस को चूस रहे हैं। काले कानूनों को हमें बदलना होगा। इसके लिए हमने 20–21 साल पहले जमीदारा पार्टी बनाई, पंजाब में इस पार्टी की सरकार बनी, काले कानून बदले, किसान ने नये सूरज को उगते देखा, सूदखोरों की बही के कागज पर अचार रखा देखा, किसान की कूर्की जमीन वापस मिली और वह कर्जे से मुक्त हुआ। आज पंजाब में किसान राज है।

जब मैं काले कानून बदल रहा था तो मुझे फिरका फिर प्रस्ती ताकतों व सूदखोरों के बारबार धमकी भरे खत आते रहते थे, पर मैं डरने वाला नहीं था। जब मैं सुबह हुक्के पर बैठा किसान की खुशहाली की स्कीम बनाता रहता था तो मुझे आवाज सुनती थी, प्रभातफेरियों में कहा जाता था– 'ओ केहडी माई, जिसनु जम्मा छोटूराम कसाई'। लायलपुर की जनसभा में तो मुझे खुलासा करना ही पड़ा– 'मैं जमीदार की हम की लड़ाई लड़ रहा हूं, मैं जाट हूं, जिस दिन जाट डर गया उस दिन वह मर गया। यदि मैं इतना डरपोक होता तो कौन मुझे लाहौर आने देता। मेरे साथ किसान की अद्वितीय

शक्ति है, इसलिए तो मेरे लाहौर के गरीब निवास को शक्ति भवन कहा जाता है। मुस्लिम लींग जिन्ना पंजाब में धार्मिक जहर फैला कर हमें बांटने की कोशिश कर रहा है। जिन्ना कलाल पंजाब में किसान राज हटाकर महाजनी राज लाना चाहते हैं। हम आजादी की दहलीज पर खड़े हैं, इंशाला कल भारत आजाद होगा तो हम भारत में भी किसान राज लायेंगे। मेरा यकीन करो मेरे साथ डटे रहो। अब हमें आजादी के लिए नये औजारों की भी जरूरत पड़ेगी। किसानों की आवाज बुलंद करने के लिए अपना अखबार निकालना होगा। तालीम पर भी जोर देना होगा, किसान एकता को बरकरार रखना होगा।

इस जनसभा में उन्होंने सचेत किया था कि ''भारत का भविष्य मजबूत किसान राज में ही सुरक्षित है। किसान के चारों तरफ दुश्मनों का डेरा है।'' उन्होंने वहां कहा था– 'पहला चुनाव 1920 का था, मुझे सूदखोरों ने हरवा दिया था। लूटेरे–कमेटी का द्वंद्व जारी है। शोषित और शोषक का महासमर चल रहा है। ग्रामीण व शहरों की सुविधाओं का ज्वलंत मुद्दा है। अमीर–गरीब की लंबी खाई बढ़ रही है। राजनीतिक प्रतिक्रियाओं में नगरों के वर्चस्व के खिलाफ जेहाद छिड़ा है– वोट हमारे राज तुम्हें कैसे सौंप दें, इस सोच को कारगर बनाना है। पूंजीपति सत्ता से तालमेल बनाकर देहात को उभरने नहीं देना चाहते। कुछ ताकतें मेरे प्रथम प्रयासों को विफल करने पर उतारू हैं। मैं इन सभी की तरफ से सतर्क हूं आपको भी सावधान रहना होगा। यह हल, हुक्के व हक का मुद्दा है। जिन्ना के पाकिस्तान के नापाक इरादे को चकनाचूर करना होगा। इसी उम्मीद के साथ में अपनी तकरीर को विराम दे रहा हूं खुदा हाफिज ।''

वे अपार भीड के सामने तीन घंटे बोले। तकरीर के बाद वे बेहोश हो गये, तबीयत बिगड़ गई। उन्हें तुरंत लाहौर लाया गया। उनका स्वास्थ्य दिनों दिन गिरता गया। घर से ही सरकारी कामकाज करते रहे। आखिरी हुक्म उन्होंने 8 जनवरी, 1945 को भाखड़ा निर्माण शुरू करने का दिया और 9 जनवरी को सुबह 10 बजे के करीब इस संसार को अलविदा कह गये, उनके आखिरी शब्द थे– 'मैं चला, राम भला करे'

किसानों के हितों तथा मुस्लिम लोग के साथ संघर्ष होने के कारण उन्हें वर्षों लगातार जो अथक परिश्रम करना पड़ा, वही उनके स्वास्थ्य एवं जीवन का हर्ता बना। सचमुच वे राष्ट्र की वेदी पर बलि चढ़ गये। आजतक किसान चौ. छोटूराम के वारिस की तलाश में हैं और खेत के डोले पर पड़ा रोता रहता है और भावुकता से दूसरे भाई को कह डालता है– ''भाई रै, प्यार करणिया मर गये।''

सगोत्र विवाह व खाप पंचायतें

– डा. भूप सिंह, विद्यानगर, भिवानी

सगोत्र विवाह, एक ही गांव में विवाह और उन पर होने वाली खाप पंचायतों को लेकर मिडिया व न्यायपालिका की प्रतिक्रिया व रूझान को लेकर समाचार पिछले कुछ समय से ज्यादा ही आने लगे हैं। अखबार व कुछ संगठनों ने खाप पंचायतों को तालिबानी–सामन्ती–मनमानी–गैरकानूनी–प्रगतिविरोधी–संवेदनहीन आदि कहा है। न्यायपालिका ने सरकारी तंत्र से प्रेमी जोड़ों की सुरक्षा को लेकर ब्यौरा मांगा है और प्रेमी जोड़ों को सुरक्षित करने और खाप पंचायतों पर नकेल डालने के लिए मौजूदा कानूनों से कठोर कानून की आवश्यकता पर बल दिया है और गोत्र व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए गोत्र क्या होता है? एक ही गांव में विवाह क्यों न किया जाये? आदि प्रश्न किये हैं।

वर्तमान परिस्थितियों में गोत्र व्यवस्था और खाप पंचायतों की भूमिका, उसका स्वरूप और उसकी पृष्ठभूमि के बारे विचार करना आवश्यक हो जाता है। मोटे तौर पर एक पूर्वज या एक स्थान पर रहने वाले पूर्वज से पीढ़ी दर पीढ़ी चली आई संतती को हम उस पूर्वज या स्थान के नाम से जो एक नाम दे दिया वह आने वाली पीढ़ियों का गोत्र कहलाया। आगे चल कर उस पूर्वज की संतान एक गोत्र की कहलायेगी। विज्ञान की भाषा में आदि आनुवंश गोत्र है। एक पूर्वज ने एक स्थान पर रहना आरंभ किया, कालांतर में उसके बेटे–पोते–प्रपोते होते चले गये और उनका निवास स्थान गांव कहलाया। हमारे देश में मुख्य पेशा कृषि रहा और कृषि एक स्थान पर रहकर ही की जा सकती है, इस प्रकार एक स्थान पर एक पूर्वज की संतानों का निवास गांव कहलाया और गांव एक परिवार के रूप में रहा। दूसरे स्थान से आये रिश्तेदार भी गांव का हिस्सा बन गये और गांव में रहने वालों का दादा–दादी, चाचा–चाची, ताऊ–ताई, भाई–बहन और बुआ–बेटी का ही संबंध रहता है। गांव में सभी का एक दूसरे से लगाव, संबंध, परिचय और विभिन्न कार्यों में एक दूसरे के सहयोग के कारण गांव एक परिवार के रूप में होता है। शहर में विभिन्न पेशे, विभिन्न समुदाय, बड़े आकार और एक दूसरे से वास्ता न होने के कारण शहर गांव की तरह इकाई नहीं बन पाता। शहर की संपत्ति को बेचकर दूसरे शहर में कभी भी रह सकते हैं पर एक गांव की संपत्ति बेच कर इतना आसानी से दूसरे गांव में नहीं रहते क्योंकि गांव बदलने का अर्थ है परिवार बदलना।

निराश में प्रतीक्षा अंधे की लाठी है। –प्रेम चंद

एक गोत्र में विवाह करने की वर्जना हमारे धर्म ग्रंथों में की गई है जिसका वैज्ञानिक आधार भी है कि मनोवैज्ञानिक सामाजिक आधार भी है। एक गोत्र के विवाह को विज्ञान कमजोर संतती होने की वजह से मना करती है। धार्मिक–सामाजिक–मनोवैज्ञानिक आधार पर स्पष्ट रूप से मनुस्मृति में एक गोत्र के विवाह की मनाही है। मनु महाराज की सामाजिक–राजनैतिक व्यवस्था को आधुनिक व्यवस्था से या प्रेमी–जोड़ों की व्यवस्था से निम्न स्तर की मानने का कोई आधार नहीं है।

हम सभी संदर्भों को छोड़ कर भी यदि सामान्य मानव स्वभाव, सामान्य वृतियों, इच्छाओं की दृष्टि से भी इस समस्या पर विचार करें तो विवाह के मामले में अधिक से अधिक गोत्र टालने (अपना गोत्र, मां का गोत्र, दादी का गोत्र और किसी भाईचारे का गोत्र) की उपयोगिता सहज ही समझ में आ जाती है। एक सामान्य व्यक्ति की इच्छाओं, वृतियों की कोई सीमा या नियंत्रण नहीं होता। विशेष कर एक जवान आदमी के लिए जिसका स्वाध्याय, दिनचर्या, खानपान, रहन–सहन और उसका परिवेश अति सामान्य है उसको प्रत्येक जवान लड़की प्रेमिका दिखाई दे तो आश्चर्य नहीं। यदि कोई भी लड़की जिस पर उसका मन आ गया तो उसको पत्नी बनाने की वह हरसंभव कोशिश करेगा फिर वह लड़की चाहे उसकी परिवार की हो, गांव की हो और किसी भी संबंध (बहन, बेटी, बुआ) की क्यों न हो। वह उसको प्रत्येक सही–गलत तरीके से प्राप्त करेगा और मिडिया का प्रेमी जोड़ा बनकर रहेगा। अब यदि हम गोत्र व्यवस्था को युवक के दिल–दिमाग में मजबूती से बिठाये हुए है तो वह युवक अपने गांव की सभी लड़कियों को, अपने गोत्र की सभी लड़कियों को चाहे वे दूसरे गांव की भी क्यों न हों बहन–बेटी या बुआ की दृष्टि से देखेगा। यदि हम मां और दादी के गोत्र को भी विवाह में टाल देते हैं (छोड़ देते हैं) तो उस युवक के दिमाग में बहन–बेटी–बुआ का दायरा बड़ा विस्तृत हो जाता है ओर इस प्रकार युवक की उच्छृंखल भावनाओं को काफी हद तक नियंत्रित कर देते हैं। यदि गोत्र जैसा वैज्ञानिक व सामाजिक बंधन हटा लेते हैं तो भावनाओं पर नियंत्रण नहीं रहता और उच्छृंख्लता (जिसको मिडिया और न्यायपालिका स्वतंत्रता कह रही है) कहीं तक जा सकती है। यदि मिडिया और न्यायपालिका की मानें और प्रेमी जोड़ों को एक गोत्र ओर अपने ही गांव में विवाह की अनुमति दे दे तो यह क्यों संभव नहीं होगा कि कल सगे भाई–बहिन भी कोर्ट या मंदिर में जाकर विवाह कर लें क्योंकि न्यायपालिका के लिए तो लड़के–लड़की का बालिग होना काफी है फिर चाहे विवाह करने वाले सगे भाई–बहन, पिता–बेटी, मां–बेटा भी क्यों न हो। अब सुप्रीम कोर्ट भी मेरी इस बात को कैसे मना कर सकता है कि ऐसे समाज में जहां गोत्र जैसी सामाजिक वर्जनायें न हों और व्यक्ति की तथाकथित स्वतंत्रता और तथाकथित प्रेम को ही काफी माना जाता है वहां भाई को बहन से, पिता को बेटी से, बेटे को मां से प्रेम नहीं होगा और वे अपने प्रेम को सफल करने के लिए विवाह न करेंगे? इस प्रकार की छूट देकर हम मानव–समाज बना रहे हैं या पशु–समाज बना रहे हैं यह तो मिडिया या न्यायपालिका ही बता सकती है।

अब हम कानून–संविधान और खाप पंचायतों की वैद्यता पर विचार करें। मैं अपने आपको पूरा देशभक्त, देश के कानून व संविधान का सम्मान करने वाला मानता हूं पर कुछ मूल सिद्धांतों का कायम भी हूं। यह एक मूल सिद्धांत है कि कानून व संविधान मानव कल्याण, समाज कल्याण के लिए हैं न कि मानव और समाज को कानून व संविधान की बलि चढ़ाया जा सकता है। संविधान या कानून क्या है? वह रिवाज–परंपरा–मान्यता जो लंबे समय से बहुत सारे लोगों द्वारा अनुभव में लाकर मानव व समाज कल्याण के लिए स्थापित की गई है, मानी गई है– कानून कहलाता है। अब खाप पंचायतों की मान्यताओं को कानून की कसौटी पर रखें तो खाप–पंचायतों की मान्यताओं को कानून की कसौटी पर रखें तो खाप–पंचायतों द्वारा समर्थित मान्यतायें हजारों सालों से लाखों लोगों द्वारा अनुभव की गई समाजहित की परंपरा यही हैं जबकि संविधान का कानून (न्यायपालिका का आधार) कुछ लोगों द्वारा लिखित और उधार ली गई 100–50 साल की बातें हैं। मेरी इस स्थापना का एतिहासिक व सामाजिक आधार देखें तो देश में गांव स्तर व खाप स्तर पर पंचायतों में राजनैतिक हस्तक्षेप और चुनाव की खराबी से पहले पंचायतों द्वारा लिये गये निर्णय ज्यादा संतुलित और मान्य होते थे। मुझे यह कहते कोई हिचक नहीं है कि राजनैतिक हस्तक्षेप न किया जाये तो पंचायत व खाप–पंचायत न्याय करती है जबकि न्यायलय न्याय नहीं निर्णय देता है।

वर्तमान परिस्थितियों में यह अति आवश्यक है कि मीडिया व न्यायपालिका प्रेमी जोड़ों के मामले में व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ–साथ सामाजिक–मनोवैज्ञानिक सरोकारों की तरफ भी ध्यान दे न कि यांत्रिक रूप से निर्णय करे। मैं मीडिया व कुछ संगठनों को भी यह कहना चाहुंगा कि यदि मीडिया व प्रेमी जोड़ों के समर्थक संगठन इतने जनवाही व प्रगतिशील है तो सलमान रूश्दी व तस्लीमा को भारत में रहने की अनुमति दिलाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका डालें और भारत सरकार पर भी दबाव डालें क्योंकि ये लेखक भी तो प्रगतिशील हैं। मुझे यह भी याद नहीं आता कि इमरजैंसी में (1975–77) नसबंदी का मुस्लिम भाईयों द्वारा विरोध करने पर इनके खिलाफ कोई याचिका डाली हो क्योंकि जनसंख्या बढ़ना खाद्य समस्या से जोड़ा जाता है और खाद्य समस्या एक राष्ट्रीय समस्या है। किसी न्यायालय ने भी कोई कानून बनाने की पहल नहीं की थी।

अंत में मैं मीडिया व न्यायपालिका से यह निवेदन करना चाहूंगा कि वे प्रेमी–जोड़ों के संबंध में लिखते समय व

सच्चा प्रेम स्तुति से प्रकट नहीं होता, सेवा से प्रकट होता है। –महात्मा गांधी

निर्णय लेते समय सामाजिक–मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर भी ध्यान दें। मेरे यह कहने का अभिप्राय यह न निकाला जाये कि मैं प्रेमी जोड़ों की हत्याओं की वकालत करता हूं पर मैं यह कहना चाहता हूं कि हमें इन घटनाओं के कारणों पर गंभीरता से विचारना चाहिए और इन कारणों को हटाने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि मेरी दृष्टि में परिणाम से कारण ज्यादा महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह दर्शन का मूल सिद्धांत है कि कार्य कारण में निहित होता है। मैं मीडिया कर्मियों और न्यायधीशों को इतिहास–समाजशास्त्र व धर्म संबंधी साहित्य पढ़ने का सुझाव भी देना चाहूंगा। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य की भावनाओं, विचारों और सामाजिक स्वतंत्रता पर कुछ नियंत्रण, मर्यादा, संयम होना स्वयं मनुष्य के लिए और उसके समाज के लिए स्वास्थ्य वर्धक है हानिकारक किसी भी प्रकार नहीं है। जैसे पानी को किनारा देने से सिंचाई करता है और किनारे टूटने पर वही पानी बाढ़ लाकर विनाश करता है। इसी प्रकार युवक–युवतियों की भावनाओं–विचारों को मर्यादित रखने पर समाज आगे बढ़ता है, पिछड़ता नहीं। युवक–युवतियों की भावनाओं को नियमित करने के लिए नशाखोरी–अश्लीलता–ऐयासी भोगवादी मनोवृति को सरकार–मीडिया व न्यायपालिका रोकने का प्रयास करें। इस कार्य में खाप पंचायतें सहयोग करेंगी।

Assessing three years'performance of Modi Government

- R.N. Malik

Leaving aside sociological and ideological issues, I always assess the performance of Indian Government through the prism of economic development only with the benchmark of three parameters -

a) Is the government doing enough to eradicate poverty by 2025. In other words, to bring all poor families above the poverty line by then.
b) Will India be able to remove the tag of an underdeveloped country by 2025.
c) Will India be able to beat China in the economic race or will Indian economy rank as the third largest in the world by 2030.

These three parameters are the genuine indicators of a prosperous and poverty-free India and also expected to be fulfilled from an efficient govt. These goals are most desirable,rigorous but achievable within the stipulated period. They fall within the reach of the governance, provided the government is determined, draws a precise roadmap and implements the designed programs aggressively. But unfortunately, neither the previous nor the present government thinks on these lines and always set ambiguous and amorphous goals. On the other hand, the Prime Minister Shri. Narendra Modi has now fathered a new and uncanny slogan i.e. "A socially vibrant, culturally strong and economically buoyant New India, by 2022".The route map of such a dream India has not been sketched so far. Accordingly, both the media (both print and electronic)and the public have ignored this rhetoric.

The government has now given a costly front page ad in all the newspapers on 26th May under the title "SAATH HAI, VISHWAS HAI - HO RAHA VIKAS HAI ". The government lists out its achievements in ten blocks under different titles. 80% of the milestones are of cosmetic nature. For example, one achievement is highlightedas "The whole world celebrates the International Yoga Day." Significant achievements displayed are the passage of GST Bill (definitely a game changer achievement), Mundra loan scheme amounting Rs. 3.15 trillion, six new IITs, seven IIMs, construction of highways at 22kms/day by NHAI, excess coal mining by Coal India Ltd, massive increase in FDI, providing sanitary latrines in 40 million households, doubling and electrification of railway tracks at the rate of 2000kms/year and demonetization of old currency notes.(Demonetization is still a debatable issue because of two reasons - Firstly, printing of new currency notes cost the exchequer Rs. 28000 crore. Secondly demonetization order was not followed by strict regulatory control on withdrawal of money from the banks to encourage cashless transaction. Now anybody can withdraw any amount of money to bribe the powerful).

7.4% jobless GDP growth (highest in the world) does not provide excitement in the background of growing unemployment and recessionary trends in many sectors particularly the Real Estate. GDP growth is not a panacea for all the ills besetting the country and therefore, it should not be followed as the sole indicator of the social and economic health of the country. For example - the country now cannot even boast of ten cities having 100% sewerage system. Likewise, India still occupies 130thplace in the International grading of Human Devolvement Index(HDI) and ease of doing business. Therefore, what has been achieved so far during the three years is not enough to usher into a New India by 2022 or 2027 though some of the projects undertaken are really game-changers. It requires much more work to be done at push button efficiency or at war footing like the Chinese Govt. P.C.

Chidambaram seems to be right when he says, "A sinking feeling has set in the country". In other words, the Feel Good Factor at the moment is missing. Now the main demand of the farming community is, "Save us from the loot of private hospitals and schools and give us canal water for irrigation in time."

The PM and his associates extoll the government performance by comparing it with that of previous UPA govt. This is like comparing the performance of a second divisoner with another student who failed in the exam. Rationality demands that we should compare the performance of our Govt. with that of neighboring China whose economy was worse than ours till 1980. Also look at countries like Poland whose economies were shattered totally during second world war and they were able to rebuild the same within next 15 years. India has not attained the same level of development even 70 years after her independence. Wise people always compete with those who are already ahead of them in the race.The govt. has not launched any earth-shaking project so far like the 3 Gorges Dam in China which generates 18200 MW of power and was completed in just six years. The only credible project initiated by this govt. so far is the construction of eastern periphery road around Delhi. Two ambitious freight corridor projects were initiated by the previous govt. PM has so far inaugurated projects that were launched by UPA.

Four keys to open the doors of prosperity of a developing nation are strict population control, massive infrastructure development, reforms and total sanitation.The three years' rule of BJP is missing on all the four fronts.God has been very bounteous in providing vast natural resources in India. The deficiency of hydro carbons has been more than compensated with vast potentials of hydro power and solar energy.But successive govts. lacked the knack of exploiting them. Provision of 40 million sanitarylatrines is commendable job but it is a very small part of total sanitation program. That is why the wonderful Swachh Bharat Abhiyan has become a joke.

The Prime minister committed the cardinal mistake of scrapping the Planning Commission and replacing it with effete NITI AAYOG. The scope of AAYOG was limited to suggest only policy changes. Consequently the govt. worked with thumb rules and has been groping in the darkness since then.Only now the PMO has directed NITI AAYOG to prepare vision documents for the year 2020,2024 and 2032. The draft document prepared for the year 2020 has not been accepted by the State CMs and is still in the process. But definitely NITI AAYOG is working hard on these drafts.

20 core areas which only can boost economy or push the engine of growth to make India a developed country by 2030 are - (1) strict policy on population control,(2) water resources and hydro power development, (3) achieving total sanitation, (4) splitting country size states into smaller ones,(5) making 7 NE States as hub of dairy development and horticulture,(6) setting up 30 new cities to act as sub _ capitals of states,(7) massive improvisation of tourist hotspots,(8) building new expressways,(9) extension of irrigation facilities inCentral India,(10) improving exports of mineral wealth,(11) massive exploitation of solar energy (lowest hanging fruits),(12) massive improvement in existing health services,(13) improving educational standards of govt and private institutes,(14) massive intrusion in the development activities in African countries,(15) setting up modern industrial parks and SEZs along coastal areas to boost industrialization,(16) decentralizeIndian Railways and allowthe States to run trains in their respective territories,(17) solve the grave problem of NPAs (Rs. 9.5 trillion) and rising debts on states (Rs. 4.7 trillion on Maharashtra state alone) and PSUs like Air India with a debt of Rs. 50,000 crores, (18) Stabilize the wobbling Sensex by controlling FIIs. (19) P.M. should captain the team of C.M.s to synergies the development efforts. (20) Aggressive exploitation of hydrocarbons both in and outside the Country. Unfortunately, none of these 20 goals fall in the priority list of development plans of the Govt.

India is now passing through the most critical period of its post-independence era because of abnormal increase in population count. It was 122 crores in 2011 and will be 140 crores in the year 2021as we are adding one Australia every year to the national pool. Population of this size will become thoroughly unmanageable and all economic models will fail miserably to control social turmoil and make governance dysfunctional. It is in this background that three years' report card of BJP govt does not present a bright and reassuring picture. The greatest threat to social harmony and security will come from the implosion of time bomb of expanding population and vast army of unemployed youths. The performance of NDA government is certainly better than that of UPA government but falls much below the expectations of aspirational, impatient and transactional youths who catapulted BJP to power in 2014 and again in U.P. with land slide victories.

The Govt. is now following the footsteps of UPA govt by offering freebies to the poor to maintain pro-poor posturing and trying to keep the rest in good humor by offering palliatives like digital India or Start-up India or Skill-India, Smart City India or cashless India to win the 2019 elections.Freebies only allow the poor to subsist and do not eradicate poverty. Therefore, the PM needs to revisit the trend of his policies and wear the mentle of statesman like Sardar Patel, Dang Xio Ping or Lee KuanYiew to take the country out of the social and economic morass.

किसानों का कर्ज माफ : एक विश्लेषण

भारत कृषि प्रधान देश माना जाता है क्योंकि कुल आबादी का दो तिहाई भाग प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से इस पर निर्भर करता है। लेकिन अब यह धारणा गलत सिद्ध हो गई है क्योंकि सकल राष्ट्रीय उत्पादन में कृषि का हिस्सा घटकर 13 प्रतिशत रह गया है। इसका कारण गत सात दशकों में कृषि नीति ग्रामीण विकास– कृषि उत्पादकता, भूमि सुधार, बिजली आपूर्ति, कुटीर एवं छोटे पैमाने के उद्योग, सड़क यातायात एवं पेयजल व्यवस्था, शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के समन्वित रूप में नहीं बनाई गई है। इससे ग्रामीण जनसंख्या का रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन हुआ है तथा शहरों का विस्तार कृषि भूमि को हड़प चुका है जिसके परिणामस्वरूप जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, आवाज प्रदूषण, गंदी बस्तियों का प्रादुभाव, बिना नगर नियोजन के भूमाफियाओं की चांदी, लूट–खसोट, कानून की बिगड़ती स्थिति आदि समस्यायें उत्पन्न हो चुकी है।

सरकार कृषि वित्त–अल्पकालीन मध्यम कालीन एवं दीर्घकालीन आपूर्ति करती है। दो बार निजी क्षेत्र की व्यापारिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों कका विस्तार शीर्षक बैंक के रूप में राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की स्थापना, सहकारी बैंकों की त्रिस्तरीय ढांचे का विस्तार, व्यापारिक बैंकों द्वारा प्राथमिकता क्षेत्रों को अपने दिये ऋणों का 40 प्रतिशत करना आदि महत्वपूर्ण कार्य किये गये हैं। सरकार किसानों की ऋण माफी की योजना को तर्क संगत नहीं बना पायी है और यह प्रत्येक राज्य सरकार के लिए वित्तीय बोझ तथा वोट बैंक की राजनीति बनकर रह गया है। भूतकाल में बैंकों द्वारा ऋण मेला आयोजित किये गये हैं और इससे रोजगार के अवसरों का सृजन नहीं हुआ है बल्कि बैंकों के गैर–निस्पादित परिसंपत्तियों में वृद्धि हुई है। किसानों की कृषि साख हेतु वित्तीय संस्थाओं पर निर्भरता तथा राजनीतिक दबाव से ऋण माफ करवाना एक स्थाई समाधान नहीं है। इससे राज्य सरकार के बजट पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। राज्य सरकारों के पास विकास कार्यों के लिए बजट कम हो जाता है। विकास की गति को तेज नहीं किया जा सकता है। केंद्र सरकार पर राज्यों की निर्भरता बढ़ती जा रही है। बिजली के बिल माफ करना, रियायती दर पर बिजली आपूर्ति, डीजल, खाद बीज पर अनुदान आदि से भी सरकार पर वित्तीय बोझ बढ़ा है। ऐसी स्थिति में किसानों को दिये जाने वाले ऋण को प्रतिवर्ष माफ करना न्यायोचित नहीं है। इस समस्या का स्थाई समाधान ढूंढ़ना होगा और निम्न कदम दृढ इच्छा शक्ति से उठाने होंगे :–

1. कृषि आधारित उद्योगों को प्रोत्साहन – पशु पालन, मछली पालन, डेयरी उद्योग, कुकुट पालन, धाणी उद्योग, आलू से अंकल चिप्स, कपास से सूत एवं जिनिंग उद्योग, रंगाई–छपाई आदि का विकास एवं विस्तार करना आवश्यक है। लघु एवं सीमांत कृषकों का स्वयं सहायता समूह गठित करना आवश्यक है। इससे इनकी बचत एवं उत्पादकता बढ़ेगी तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी। इनकी ऋण अदायगी की क्षमता बढ़ेगी। ग्रामीण जनसंख्या का शहरों की ओर पलायन कर रोक लगेगी।

2. कृषि साख को उत्पादकता से जोड़ना – कृषकों को दिये जाने वाले ऋण को कृषि उत्पादकता से जोड़ना होगा। ऋण स्वीकृत करना और वितरित करना ही पर्याप्त नहीं है। ऋण के उपयोग पर निगरानी रखनी होगी क्योंकि इसका उपयोग अनुत्पादक कार्यों–सामाजिक एवं धार्मिक पर खर्च कर दिया जाता है। और उसकी ऋण वापसी नहीं होती है।

3. फसल का न्यूनतम मूल्य – केंद्र सरकार प्रति वर्ष रबी और खरीफ फसलों का न्यूनतम सहायता मूल्य घोषित करती है लेकिन इस मुख्य निर्धारण में फसल की लागत के विभिन्न तत्वों–खाद, बीज, सिंचाई, श्रम, देखरेख, जुताई, बुवाई, कटाई, यातायात व्यय, रख–रखाव का समावेश नहीं किया जाता है जिससे किसान की फसल का मूल्य तथा उस फसल की लागत में अधिक अंतर पाया जाता है। खेती करना एक घाटे का सौदा हो गया है। उत्तर प्रदेश में एक समय आलू की खुदाई किसानों द्वारा नहीं की गई क्योंकि बाजार कीमत काफी नीचे थी और आलू खेतों में सड़ने दिया गया। फूल माली तथा टमाटर उत्पादक भी इस बाजार कीमत के निम्न स्तर पर आने से घाटे में रहे है। अतः सरकार को देशकाल, वातावरण को ध्यान में रखते हुए न्यूनतम कीमत निर्धारित करनी होगी।

4. राज्य सरकारों द्वारा खरीद – ग्रामीण मंडियों का विस्तार किया गया है। लघु एवं सीमांत किसानों की सौदाकारी शक्ति कमजोर है और उसे अपने माल को कम कीमत पर बेचना पड़ता है। सरकार को क्रय केंद्र स्थापित करके सीधे कृषकों से फसल खरीद कर राहत देने की आवश्यकता है।

5. गोदामों का निर्माण – राज्य एवं केंद्रीय स्तर पर गोदाम निगम गठित किये गये हैं लेकिन गोदामों की संख्या एवं इनकी क्षमता कम होने से किसानों द्वारा अपनी फसल का भंडारण संभव नहीं होता है। पंचायत स्तर पर सहकारी संस्थाओं के माध्यम से ऐसे भंडारण का निर्माण एवं रख–रखाव आवश्यक है। छोटे एवं सीमांत किसानों को अपना माल गिरवी रख–कर साख लेने की सुविधा होनी चाहिए। इससे इनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

6. सूखी खेती – भारतीय कृषि मानसून का जुआ है। ऐसी अनिश्चितता के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित होती है। सूखी खेती को बढ़ावा देना होगा। व्यावसायिक खेती–फलहार वृक्ष, लकड़ीदार पेड़, मेड़ बंदी, वर्षा के पानी को एकत्र करना आदि प्रोत्साहन के माध्यम से कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सकता है।

7. लघु सिंचाई परियोजनाओं को प्रोत्साहन – कृषि की सिंचाई हेतु छोटी परियोजनाओं को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इसमें लोक निजी सहभागिता को आधार बनाया जावे जिससे कि सिंचित क्षेत्र का विस्तार हो सकेगा। कृषि उत्पादकता एवं उत्पादन में वृद्धि होगी।

8. जैविक खेती – इसके लिए कृषकों को साख एवं अनुदान दिया जा रहा है। इससे कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी। इसके साथ ही भूमि की उर्वरकता में कमी नहीं होगी। विभिन्न प्रकार की फसल बीमारियों तथा मानव बीमारियों से मुक्ति मिलेगी।

निष्कर्ष :– किसानों को ऋण अदायगी की समस्या का स्थाई समाधान बिना किसी राजनीति के दृढ़ इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। इसे वोट राजनीति का आधार नहीं बनाया जाना चाहिए। किसानों को भी अपने संसाधनों पर निर्भर होकर आर्थिक स्थिति को सुधारने की आवश्यकता है। वित्तीय संस्थानों को भी साख के सदुपयोग हेतु निरंतर पर्यवेक्षण करना होगा; जनता का अपेक्षित सहयोग भी आवश्यक है।

महानतम क्रांतिकारी राजर्षि राजा महेंद्र प्रताप के साथ समाज, शासन व इतिहासकारों ने न्याय नहीं किया; उनके ऐतिहासिक मूल्यांकन की परम आवश्यकता

– प्रोफेसर डा. दुर्गपाल सिंह सोलंकी

''आर्यान पेशवा त्यागमूर्ति राजा महेंद्र प्रताप एक महान यशस्वी क्रांतिकारी देशभक्त, विचारक, भारत में औद्योगिक शिक्षा के जन्मदाता थे। उन्होंने हिन्दुस्तान को आजादी दिलाने में अपने जीवन की बाजी लगाते हुए विश्व को प्रेम धर्म, संसार संघ और नव विचार विज्ञान जैसे उत्कृष्ट विचार प्रदान किए। उनके देशभक्ति और त्याग के सामने अनेक लोगों का व्यक्तित्व फीका पड़ जाता है, लेकिन हमारी राजनीति की विडंबना है कि ऐसे भारत माता के सच्चे सपूत और भारतीय स्वाधीनता के भीष्म पितामह को उपेक्षित किया है। समाज, शासन और इतिहासकारों ने भी उनके साथ न्याय नहीं किया। अब उनके ऐतिहासिक मूल्यांकन की परम आवश्यकता है।''

उक्त विचार राजा महेंद्र प्रताप मिशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रोफेसर डा. दुर्गपाल सिंह सोलंकी ने राजा साहब की 38वीं पुण्य–तिथि पर संपन्न राष्ट्रीय विचार संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में व्यक्त किए। प्रोफेसर सोलंकी ने कहा कि राजा महेंद्र प्रताप महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के समर्थक थे लेकिन गांधीवाद को अधूरा दर्शन मानते थे। वे समाजवादी थे परंतु मार्क्स को एकांगी मानते थे। वे राष्ट्रवादी थे लेकिन विश्व सरकार की स्थापना के प्रबल प्रणेता थे। प्राचार्य सोलंकी ने कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश ने विकास की दृष्टि से निश्चय ही तरक्की की है लेकिन चारित्रिक और नैतिक मूल्यों में जो गिरावट आई है, वह वास्तव में दुखदाई है। डा. दुर्गपाल सोलंकी ने युवाओं और मिशन के कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे महान मानवतावादी युग दृष्टा राजा महेंद्र प्रताप के जीवन आदर्शों, व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा लेकर चरित्रवान बनें। देश की भलाई के लिए सदैव तत्पर रहें और व्यक्गित स्वार्थों से ऊपर उठकर नवीन समाज और रचनात्मक रूप से राष्ट्र निर्माण में जुट जाएं।

मुख्य अतिथि समाजवादी विचारक व राजनीतिवेता डा. दौलतराम चतुर्वेदी ने कहा कि राजा महेंद्र प्रताप सांमती संस्कृति के उन शीर्षस्थ एवं मूर्धन्य ऐतिहासिक महानुभावों में थे जिन्होंने न केवल भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया अपितु उनकी विचारधारा भविष्य के भारत के निर्माण हेतु एक

अहंकार करना मुर्खों का काम है। –शेखसादी

उपयोगी प्रारूप देने में सक्षम और समर्थ रही। इतिहासविद् प्रो. अरुण प्रताप सिंह चमन ने कहा कि राजा महेंद्र प्रताप ने एक दिसंबर, सन 1915 को बागे बाबरशाह, काबुल–अफगानिस्तान में भारत की प्रथम अस्थायी स्वतंत्र राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की और इंडियन नेशनल फोर्स का गठन किया। राजा साहब इस सरकार के राष्ट्रपति और मौलाना प्रोफेसर बरकतुलला खान प्रधानमंत्री बने थे, जिसे ब्रिटेन विरोधी राष्ट्रों ने मान्यता दी थी। किशोरीरमण पी.जी. कालेज, मथुरा के राजनीति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुधीर प्रताप सोलंकी ने कहा कि राजा महेंद्र प्रताप पहले भारतीय थे जिन्होंने औद्योगिक शिक्षा के लिए सन 1909 को वृदांवन में प्रेम महाविद्यालय की स्थापना की जो राष्ट्रीय आंदोलन के दिनों में स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों का प्रशिक्षण केंद्र व शरणस्थली था।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ठा. चौधरी तेजसिंह वर्मा 'सौनिगा' ने कहा कि स्वतंत्र चिंतन एवं विचारों की निर्भिक अभिव्यक्ति के लिये माने–जाने वाले राजा महेंद्र प्रताप के जीवन का राजा साहब को 'भारत–रत्न' की उपाधि से विभूषित करने, संसद–भवन में तैल–चित्र, 'प्रेमधर्म' पुस्तक को पाठ्यक्रमों में लगाने की आवश्यकता पर बल दिया। कमला राजा स्वशासी पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, ग्वालियर, की वरिष्ठ प्रोफेसर डा. सुधा सिंह ने कहा कि राजा महेंद्र प्रताप एक प्रखर लेखक, चिंतक, उत्कृष्ट विद्वान और कुशल संपादक थे। उन्होंने सन 1929 में बर्लिन–जर्मनी से 'बर्ल्ड फैडरेशन' नामक समाचार प्रकाशित किया जो आगे चलकर अमेरिका, जापान, दिल्ली, देहरादून तथा वृंदावन से प्रकाशित हुआ। श्री शिव कुमार प्रेमी जी 'संसार–संघ' के यशस्वी संपादक थे। गोविंदराम सकसरिया इंस्टीटयूट इंदौर के परीक्षा नियंत्रक प्रो. कृष्ण प्रताप पोरस ने कहा कि राजा जी ने तत्कालीन हिन्दुस्तान की समस्याओं को दूर से ही नहीं देखा, वरन उनहें टटोला, कुरेदा और उनसे आत्मसात होकर सही अर्थों में उनके समाधान का प्रयास किय। मध्य प्रदेश महिला सभा की अध्यक्ष श्रीमती दुर्गेश कुमारी ने कहा कि आज विश्व को राजा महेंद्र प्रताप की विश्व शांति, प्रेम, एकता व सर्वधर्म समभाव के दर्शन की आवश्यकता महसूस होने लगी है। अध्यक्षीय संबोधन में परिवहन अधीक्षक रहे कुंवर अजीत सोलंकी ने कहा कि राजा जी ब्रज भूमि में जन्मे, देश की आजादी, विदेशों में समता, प्रेम व सह अस्तित्व की भावना के प्रचार–प्रसार में अपने को समर्पित किया परंतु उनका मूल उद्देश्य विश्व प्रेम व विश्व शांति ही रहा है, जिसका साधन वे समस्त विश्व की सरकारों का एक संघीय राष्ट्र के रूप में गठन को मानते हैं।

विमलेश सिंह समाजसेवी माता श्रीमती सिंह कुंवरि साहिबा ने दीनबंधु सर छोटूराम स्मृति भवन में संपन्न समारोह का दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया। ठा. इंद्रपाल विनोद मुखिया जी ने सभी का स्वागत, बंदन व अभिनंदन किया। शैलेन्द्र, तनुराज, अक्कू, ऋषम, अंशुमन, राहुल सोलंकी ने स्वागत गीत, माल्यापर्ण व परिचय प्रस्तुत किए। श्रीमती विमलेश ने प्रेम भोज आयोजन किया। संयोजक प्रबंधन व मीडिया प्रभारी संजीव कुमार कक्कू ने आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया। ''राजा साहब अमर रहें–अमर रहें'' के गगनभेदी नारों से समारोह का समापन संपन्न हुआ।

कमेरे वर्ग के भागीरथ थे चौधरी लहरी सिंह

– कपिल देव दहिया, सोनीपत

हरियाणा की माटी को इस बात का अपार गर्व है कि इसकी गोद में चौधरी लहरी सिंह जैसी महान विभूतियां खेली, कूदी और बड़ी हुई। चौ. लहरी सिंह संयुक्त पंजाब व बाद में हरियाणा के उन महान नेताओं में से एक थे, जिन्होंने आजीवन कमेरे वर्ग के लिए संघर्ष किया। यही कारण है कि आज भी उस महान विभुति को विशेषकर ग्रामीण अंचल में बड़े गौरव व श्रद्धा के साथ याद किया जाता है। चौ. लहरी सिंह ने आजीवन किसान और मजदूर वर्ग का उत्थान व कल्याण किया, जिससे वे पंजाब व हरियाणा के कमेरे वर्ग के भागीरथ कहलाए।

जब मैं अपनी बाल्यावस्था की स्मृतियों के पन्ने पलटता हूं तो मुझे याद आते हैं दहिया खाप के मशहूर पंचायती, जिला सोनीपत के अंतर्गत आने वाले गांव रोहट के भूतपूर्व सरपंच एवं मेरे पूज्य पितामह चौ. जयलाल जी, जब हुक्के की गुड़गुड़ाहट के बीच मुझे चौ. लहरी सिंह की महानता के बड़े–बड़े किस्से सुनाया करते थे। चौ. जयलाल जी अक्सर कहा करते थे कि चौधरी लहरी सिंह जैसे आर्य समाजी लीडर ही प्रदेश व मुल्क की सच्ची सेवा कर सकते हैं, जिन्होंने हमेशा सिद्धांतों की सियासत की। चौ. लहरी सिंह किसान की दुःख–तकलीफ को अच्छी तरह समझते थे और अपने दायरे से बाहर जाकर भी किसान वर्ग की मदद करते थे। इस बारे में चौ. जयलाल जी अक्सर एक घटना सुनाया करते थे– ''जब सन् 1952 में चौ. लहरी सिंह पंजाब के बिजली–पानी महकमे के वजीर और राई हल्के से चौ. रिजकराम एमएलए थे, उस समय रोहट गांव में पश्चिमी यमुना नहर के साथ लगते हमारे खेतों में सिंचाई के साधनों का ठीक इंतजाम नहीं था। गांव के दूसरी तरफ के खेतों से सिंचाई का पानी आता था। उसमें काफी दिक्कत होती थी। मैं उस समय गांव का

लोक प्रशंसा प्रायः सभी को प्रिय होती है। –प्रेम चंद

सरपंच था। चौ. लहरी सिंह और चौ. रिजकराम दोनों ही नेताओं के साथ मेरे बहुत अच्छे ताल्लुक थे। एक दिन मैं, श्रीचंद, किदार सिंह आदि कुछेक सहयोगियों के साथ पश्चिमी यमुना नहर पर खड़ा था। कुछ देर बाद गाड़ी में चौ. लहरी सिंह और एमएलए चौ. रिजकराम वहां पर पहुंचे, गाड़ी से नीचे उतरे और चौ. लहरी सिंह ने मुझसे कहा– जयलाल के बात सै, यहां क्यूकर खड़े सो? इस पर मैंने कहा चौधरी साहब खेतों को नहरी पाणी न मिलने की वजह से हम बड़े दुखी सैं। हम इस नहर में अपने लिए मोरी लगवाणा चाहवैं सैं। इस पर चौ. लहरी सिंह ने बताया कि इंजीनियर नहर का लेवल नीचा और खेतों का लेवल ऊंचा बता रहे हैं। इसके अलावा मोरी लगने के लिए नियम कहता है कि जहां लगभग 5 हजार बीघे का रकबा हो, वहीं मोरी लग सकती है। मुझे यहां पर इतना रकबा नहीं दिखता। चौ. लहरी सिंह का यह जवाब सुनकर मैंने कहा कि चौधरी साहब यदि नियम के अनुसार होता तो फिर आपकी सिफारिश क्यां तै चाहिए थी। इतनी बात सुनकर पास में खड़े एमएलए चौ. रिजकराम ने भी नियम से ऊपर होकर मोरी लगाने की सिफारिश की और वजीर चौ. लहरी सिंह ने उसी समय मोरी की मंजूरी दे दी। ऐसा करने पर मैंने चौ. लहरी सिंह और चौ. रिजकराम दोनों का धन्यवाद किया।''

महान विभूति चौ. लहरी सिंह का जन्म सोनीपत जिले के भिगान में एक संपन्न किसान चौ. रामनारायण मलिक के घर मई सन् 1900 को हुआ। चौ. रामनारायण के चार पुत्र कर्म सिंह, चरण सिंह, राजमल व लहरी सिंह थे। चौ. चरण सिंह व चौ. राजेंद्र सिंह ही आगे चलकर चौ. लहरी सिंह के राज उतराधिकारी बने। चौ. राजेंद्र सिंह हरियाणा सरकार में आपूर्ति, पंचायत एवं विकास जैसे महत्वपूर्ण विभागों के मन्त्री रहे। उनके बाद परिवार की राजनैतिक विरासत राजेंद्र सिंह के पुत्र जितेंद्र सिंह मलिक ने संभाली। जितेंद्र सिंह मलिक कैलाना विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस की टिकट पर दो बार विधायक बने 2009 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने सोनीपत संसदीय क्षेत्र से विजयी परचम फहराया। उस चुनाव में जितेंद्र सिंह मलिक को मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा का आशीर्वाद प्राप्त होने के साथ–साथ इस बात का भी बहुत बड़ा लाभ मिला कि वे कमेरे एवं दुःख तकलीफों को दूर करने वाले चौ. लहरी सिंह के पौत्र थे लेकिन दुर्भाग्य से इस बार वह लोकसभा चुनाव में हार गये।

अपने समय के प्रसिद्ध वकील तथा किसान व मजदूर के जीवन में खुशहाली लाने का काम करने वाले चौ. लहरी सिंह समाज की देन थे। उनका परिवार पहले से ही आर्य समाज से जुड़ा हुआ था। इतिहास पर दृष्टिपात करने पर पता चलता है कि आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती जब रिवाड़ी आए तो चौ. लहरी सिंह के पिता चौ. राम नारायण सिंह उनका भाषण सुनने के लिए रिवाड़ी गए थे। स्वामी जी के भाषण से प्रभावित होकर चौ. राम नारायण सिंह आर्य समाजी बने थे। पारिवारिक संस्कारों के चलते चौ. लहरी सिंह भी आर्य समाज के रंग में रंग गए। उन्होंने कांग्रेस को देश की सच्ची हितैषी जमात माना और वे कांग्रेस से जुड़े रहे। सन् 1946 के चुनाव में वे राई विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के टिकट पर विजयी हुए। जिस समय पंजाब में कांग्रेस व जमींदार पार्टी की मिलीजुली सरकार बनी, उसमें चौ. लहरी सिंह हरियाणा क्षेत्र से कांग्रेस के पहले मंत्री बनाए गए थे।

कमेरे वर्ग के उस सच्चे हितैषी ने आजादी प्राप्ति के बाद राष्ट्र के नव–निर्माण मं लगभग 12 वर्षों तक आवास व निर्माण एवं बिजली सिंचाई जैसे महत्वपूर्ण विभागों के मंत्री पद पर रहकर जनसेवा की। इसके अलावा सन 1962 में वे जनसंघ की टिकट पर रोहतक लोकसभा क्षेत्र से विजयी हुए। उन्होंने अपने राजनैतिक जीवन में बदमाश किस्म के लोगों का सफाया किया जिसकी चर्चा आज भी ग्रामीणांचल में बुजुर्गों के मुख से सुनी जाती है। जुलाना के निकट गांव मेहरड़ा में जाट–ब्राह्मण परिवारों के रामकिशन व हेमराज की आपसी दुश्मनी हुई और दोनों ने अपने–अपने गेंग बना लिए। चौ. लहरी सिंह उस समय मंत्री थे। इस बात का जिक्र आज भी आता है कि गोहाना के पास लगते भैंसवाल, जागसी, रभड़ां आदि गांवों के लोग इस गैंग में शामिल फरहैरी (बदमाशों) को रोटी आदि से मदद करते थे। इस पर मंत्री चौ. लहरी सिंह ने उपरोक्त गांवों के कई लोगों की पुलिस से खिंचाई कराई। जब उन्होंने 1962 का एमपी का चुनाव लड़ा तो वे गांव रभड़ां में वोट मांगने नहीं गए। रभड़ां के कुछ ग्रामीणों ने उनसे गांव में आने के लिए कहा। इस पर चौ. लहरी सिंह ने कहा कि रंभड़ा में बदमाश किस्म के लोगों की मदद की जाती है। इसलिए मैं वहां नहीं आऊंगा। मैं एक शर्त पर आ सकता हूं कि जो लोग मुझे पसंद करते हैं, उनके घरों से एक–एक रूप्या मांग कर लाओ। रभड़ां से 70 रूपए आए। इसके बाद चौधरी साहब वहां पर चुनाव में वोट मांगने गए।

जब वे मंत्री के रूप में शिमला में रहते थे तो उनके यहां दूध देने वाले एक स्थानीय व्यक्ति ने उनसे अपने गांव में आने की गुजारिश की। इस दूधिया का गांव पंजाब से बाहर पहाड़ी इलाके में था जो चौधरी साहब के राजनैतिक क्षेत्र से बाहर था। फिर भी वे उस गांव में गये। वहां पर चौधरी साहब का बड़ा अच्छा स्वागत हुआ और ग्रामीणों ने उनसे पानी की समस्या का समाधान कराने की मांग रखी। मंत्री चौधरी लहरी सिंह ने कहा कि उनकी समस्या का समाधान हो जाएगा, मैं मंजूर करता हूं। जब गांव से वापिस चलने लगे तो रास्ते में उनके पीए ने बताया कि यह गांव तो आपके इलाके में नहीं आता। फिर आप इस काम को कैसे करवाएंगे? इस पर चौ. लहरी सिंह

जिसकी बुद्धि ही खोटी है, उसे शास्त्र भी भला–बुरा नहीं सिखा सकता। –अज्ञात

वापिस शिमला लौटने की बजाय उस प्रदेश के संबंधित विभाग के मंत्री के पास गए और वह काम मंजूर कराया और कहा कि ऐसा न होने से लोग सरकार व राजनीति को झूठा मानेंगे। चौ. लहरी सिंह जो कहते थे वो करते थे।

सफाई पसंद चौ. लहरी सिंह गाय का दूध, सेब व सैर पर जोर रखते थे। कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व सांसद चौ. धर्मपाल सिंह मलिक का कहना है कि मुझे इस बात का गर्व है कि मैं चरित्रवान और राजनीति में स्टैण्डर्ड कायम रखने वाले नेता चौ. लहरी सिंह का शिष्य रहा हूं। चौ. लहरी सिंह के भाखड़ा नंगल प्रोजेक्ट नहर, यमुना नदी पर बांधों का निर्माण, पूरे प्रदेश में बिजली का निर्माण, बाढ़ से बचाने के लिए ड्रेन बनवाना, सहकारिता के माध्यम से चीनी मिल, किसानों की प्यासी धरती को सिंचाई का भरपूर मात्रा में पानी उपलब्ध कराना और प्रदेश से गुण्डों व बदमाशों का सफाया कर देने जैसे अनेक कार्यों को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। वे एक महान तथा उच्च कोटि के व्यक्ति थे। 3 अक्टूबर सन 1981 को उनका निधन हुआ। उनके जीवन से आर्यत्व, ईमानदारी, साहस और कर्मठता की शिक्षा ली जा सकती है।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM 4 Jat Girl 26/5'4" B.D.S. Working as Dentist Doctor in Park Hospital, Gurugram. Father Retired Chief Engineer from Indian Navy. Well settled and educated family. Niece of Sh. O. P. Dhankhar, Agriculture Minister, Haryana. Avoid Gotras: Kalkal, Dhankhar, Sangwan. Cont.: 07015056009, 09671931784
- SM 4 Jat Girl 26/5'4" B. Tech., (ECE) Family settled at Chandigarh. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Dhariwal, Rathi, Grewal. Contact: 08591363486, 09888083645
- SM 4 Jat Girl 26/5'2" M.A., B.Ed. from Punjab University. Working as Teacher in a private school in Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Khatri, Sehrawat, Lakra. Contact: 09463189771.
- SM 4 working Jat Girl 24.6/5'7" B.Tech, MBA, Preference Defence Officer. Avoid Gotras: Chhikara, Chhillar, Dalal, Tomar, Shokeen. Cont.: 09313662383, 09313433046
- SM 4 Jat Girl (DOB 23.10.87) 29.8/5'5" B.Com, MBA, MIS, M.A (Economics.) Avoid Gotras: Panghal, Baloda, Bhaghasra. Cont.: 09463967847, 09463969302
- SM 4 Jat Girl(DOB 07.02.90) 26.10/5'10" B.Tech (ESE) M.Tech (ESE) from MDU Rohtak. GATE qualified. Avoid Gotras: Kadian, Rathee, Sangwan. Cont.: 08447796371
- SM 4 Jat Girl (DOB 05.12.86) 30/5'5" M.Sc. Geology Employed as Class-I Gazzeted Officer at G.S.I. Govt. of India at Dehradun. Fathr School Lecturer, Mother Housewife. Avoid Gotras: Kundu, Rathee, Malik. Cont.: 08950092430
- SM 4 Jat Girl (DOB 19. 09. 91) 25.8/5'3" B.Tech. Employed in Management & Management Co. Pune. Avoid Gotras: Deswal, Malik, Rathi, Sangwan. Cont.: 08427945192
- SM 4 Jat Girl (DOB 30.06. 89) 27.10/5'4" B.Sc, BA, M.A. with History, CTET, HTET cleared, Employed in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Gehlawat, Dahiya, Ohlan. Cont.: 08930157656
- SM 4 Jat Girl 26/5'3" Master of Philosophy, Doing job in private Hospital. Avoid Gotras: Duhan, Chhikara, Bajar. Cont.: 09467680428
- SM 4 Jat Girl (DOB19.07.90) 26.8/5'4" M.A. Sanskrit, P.Phil from P.U. Chandigarh. NET quqlified, CTET, HTET cleared, Pursuing PhD from P.U. Chandigarh. Paper clered for Junior Lecturer in Haryana government. Father Government employee. Avoid Gotras: Duhan, Kundu, Sehrawat. Cont.: 09416620245, 09467632314
- SM 4 Jat Girl 26/5'5" B.D.S. Employed in Parexel Company in I.T. Park Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu. Cont.: 09779721521
- SM 4 Jat Girl 30/5'2" B.A. Lab. Technician. Own business, Employed as Manager in Multi Coop. Society Bank at Sonepat. Family settled at Sonepat. Avoid Gotras: Saroha, Khatri, Malik. Cont.: 09466944284
- SM 4 professionally qualified manglik Jat Girl, M.A. English, Self Employed, (DOB 24.04.87) 30.1/5'1" Earning Rs. 7-8 P.A. Match preferred in tricity. Avoid Gotras: Atri, Vohara. Cont.: 09988268021
- SM 4 Jat Girl (DOB 04.08.90) 26.8/5'4.5" MCA from P.U. Chandigarh. Employed as Software Developer in MNC Industral Area Chandigarh) Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar. Cont.: 09463330394, 09646712812
- SM 4 Jat Girl (DOB 29.02.92) 25.2/5'4" MSc Physics from P.U. Chandigarh. Pursuing B.Ed. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar. Cont.: 09463330394, 09646712812
- SM 4 Jat Girl (DOB 10.10.90) 26.6/5'8" B.Com, CA. Doing Job in a private reputed company. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Thalor, Beniwal, Pachar. Cont.: 09915577587
- SM 4 (divorcee issuless) Jat Girl (DOB August, 1987) 29.8/5'6" M. Tech. in Computer Engineering. Employed as Assistant Professor in Engineering College, Landra (Pb.). Avoid Gotras: Sangroha, Lohan, Panghal. Cont.: 09464141784, 09780683938
- SM 4 Jat Girl 28/5'7" B.Tech.in Electronic & Communication. PG Diploma in wireless networking from Torento (Canada). Father retired from Haryana government, Mother housewife. Avoid Gotras: Gaglan, Savant, Dhull, Dhull. Cont.: 09211218999
- SM 4 divorced Jat Girl (DOB 11.05. 87) 29.10/5'4" PhD (Thesis submitted) MBA, UGC, NET, M.A. (Economics). Employed as Assistant Professor in a reputed College under I.P. University Delhi with Rs. 8.5 Lakh package PA. Father Professor, Government Employee. Avoid Gotras: Lohchab., Jaitain, Nandal. March preferred residing in Delhi and from Jat Community only. Cont.: 09416831895, 08447043889
- SM 4 Jat Girl (DOB 05.09.91) 25.3/5'6" M.Tech (CSE) Employed in a University. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana. Cont.: 07696844991, 07814609118
- SM 4 Jat Boy (DOB 16.02.90) 27.4 /5'8" B.Tech. Mechanical. Employed in TATA Business Support Services Ltd. Mohali. Own house in Manimajra Town Chandigarh. Agriculture land and house in native village in District Hisar. Avoid Gotras: Kajla, Kaliramna, Khyalia. Cont.: 09915791810
- SM 4 Jat Boy (DOB 25.12.91) 25.6/6'2", Employed as J.E. in Corporation Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Vigay, Rajan. Cont.: 0172-4185373
- SM 4 Jat Boy (DOB 02.05.91) 26.1/6', BA, JBT, CTET cleared, Pursuing B.Ed. Employed in IDBI Bank. Avoid Gotras: Kundu, Dahiya,

Dalal. Cont.: 09888120102
- SM 4 Jat Boy 29/5'11" Employed as team leader in IT Park Chandigarh with Rs. 8 lakh package PA. Avoid Gotras: Khatri, Ohlyan, Rathee. Cont.: 09833286255, 09468463165
- SM 4 handsome Jat Boy 30/5'10" MBA (finance) from France. CFA, B.Tech (PEC). DHA level three cleared. Employed in MNC at Mumbai with good package. Family settled at Panchkula. Only son. Avoid Gotras: Mor, Gehlawat, Rathee. Cont.: 08360609162
- SM 4 Jat Boy (DOB 13.03.89) 27.8/5'10" B. Tech. M. Tech from Canada. Doing Job in Canada. PR status. Avoid Gotras: Sarao, Basiana, Ojaula. Cont.: 08288853030
- SM 4 divorced Jat Boy (DOB 04.12.81) 35.6/5'11" M. Com, MFC, MBA, Own business. Family settled at Jaipur. Father retired from Rajasthan Govt. Originally from Rohtak (Haryana). Avoid Gotras: Tehlan, Budhwar, Hooda. Cont.: 09782178687
- SM 4 Jat Boy (DOB13.08.89) 31.7/6'1" MA, Mass Communications from London. Working in MNC Gurgaon with 12,5 lakh package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat. Cont.: 09717616149
- SM 4 Jat Boy (DOB 30.08.84) 32.8/6'4" B. Tech. Electronics & communications. Employed as Assistant Manager in Nationalized Bank. Parents retired Government officers. Avoid Gotras: Ahlawat, Malik, Sangwan. Cont.: 09417496903
- SM 4 Jat Boy (DOB 30.09.89) 27.6/5'10" B. Tech. Computer Engineering. Two flats and one showroom in Gurgaon. Father retired Principal. Avoid Gotras: Sheokand, Malik, Punia. Cont.: 09871044862
- SM 4 Jat Boy (DOB 28.10.85) 31.4/5'11" MBBS, M.S. from PGI Rohtak. Posted at Bhalot (Rohtak) as regular Medical Officer. Avoid Gotras: Dhankhar, Beniwal, Rathee. Cont.: 09416770274
- SM 4 Jat Boy (DOB 28.10.90)26.10/5'11" BDS, MDS. Father S.D.O. retired from Haryana Government. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09915577587
- SM 4 Jat Boy (DOB 01.08.85)31.6/6'1" M.A.,Mass Communication from London (England). Employed in MNC Company at Gurgaon with Rs.12.50 Lakh Package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat. Cont.: 09717616149
- SM 4 Jat Boy (DOB Nov.1989) 27.1/6' B.Sc in Hospitality & Hotel Administration. Occupation Hotel Industries in Dubai Package Rs. 10 lakh P.A. Father, Mother Haryana Govt. Employees at Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Dahiya, Tomar (Not direct Sangwan, Bhanwala). Cont.: 09416272188, 09560022263, 09416504181
- SM 4 Jat Boy 30/6' B.Tech. from P.E.C. Chandigarh. Employed in Jindal Steel Ltd. with Package Rs. 8.5 lakh P.A. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Dhariwal, Lather, Basati. Cont.: 09592383356
- SM 4 Jat Boy 25/5'8" B.Tech from PEC Chandigarh Employed as Inspector in Custom & Central Excise (C.G.S.Bombay) Avoid Gotras: Poonia, Lohan, Rathee. Cont.: 08950492573
- SM 4 Jat Boy (DOB 04.12.90) 26/6' B.Tech Employed in Pb. & Sind Bank as P.O. at Jalandhar. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Brar, Beniwal. Cont.: 09467037995, 09416048202
- SM 4 Jat Boy (DOB 15.04.91) 25.8/5'9" M.A. Employed as Clerk in SBI Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Kundu, Saroha. Cont.: 08813089176, 09138530000
- SM 4 Jat Boy (DOB 23.08.89) 27.4/5'10" B.Tech. Employed as Service Engineer in Tata Motor Ltd. In Haryana. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Rathee. Cont.: 08950092430
- SM 4 Jat Boy (DOB 25.11.87) 29./5'9" 10+2 Employed as Data Operator in UT Chandigarh on contract basis. Avoid Gotras: Hooda, Rathee, Kadian. Cont.: 09463457433
- SM 4 Jat Boy (DOB 21.04.90) 26.8/5'9" B.Tech Employed as Assistant in Haryana Civil Secretariat in Excise & Taxation Deptt. Only son, Father & Mother Gazzeted Officer in Haryana Govt. Avoid Gotras: Mor, Siwach, Singroha. Cont.: 09988701460
- SM 4 Jat Boy 28/5'10 B.A. PGDCA from P.U. Chandigarh. Employed in Punjab Coop. Bank as Regular D.E.O Father in Haryana Govt., Own Flat at Panchkula. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Gill, Nandal, Bazar. Cont.: 09876875845

उथल पुथलकारी युग में – प्रेरक प्रसंग

– मोनिका आर्या, मतलौडा, हिसार

आज का बालक कल–समाज संचालक और राष्ट्र नायक बनता है। छोटे पौधे ही विशाल वृक्ष बनते हैं। अतःएव कुशल माली छोटे पौधों की आवश्यकता एवं सुरक्षा पर पूरा–पूरा ध्यान देते हैं। उन्हें खाद–पानी की कमी नहीं पड़ने देते। वन्य पशु उन्हें नष्ट न कर डालें, इसका समुचित ध्यान रखते हैं। गृहस्थों को, अभिभावकों को भी जागरूक माली की तरह होना चाहिए तथा गृह–उद्यान रूपी सुरम्य पौधे बालकों को समझना चाहिए। सुसंतानों के जीवन–निर्माण में माता–पिता का महत्व बेजोड़ है। अतः आज समय की मांग है कि राष्ट्र के भावी नागरिक, परिवार–रूपी खदान से ही निकल सकते हैं। इस उथल पुथलकारी युग में पांच कारखानों (माता, पिता, गुरु, साधु और सरकार) का उत्तरदायित्व है कि बालकों को संस्कारित करने में अपना योगदान दें। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनसे विदित होता है कि माता, पिता, गुरु और साधुओं की सजगता से अनेक महामानव बने हैं।

1. शकुंतला द्वारा शिशु निर्माण

महर्षि कण्व के आश्रम में पली, विश्वामित्र कन्या शकुंतला अपने अध्ययन और आश्रम प्रबंध में संलग्न रहती थी। एक दिन राजा दुष्यंत उधर आ निकले और आश्रम में ठहरे। उन्होंने भोली कन्या शकुंतला को बहका लिया और उसके साथ विवाह करने का वायदा कर सहवास–संपर्क स्थापित किया। गर्भ में बच्चा आ जाने पर महर्षि कण्व ने विद्यार्थियों के साथ शकुंतला को राजा दुष्यंत के पास पत्नी रूप में रखने के लिए भेजा। परंतु दुष्यंत ने वायदा भुलाकर परिस्थितिवश पीछा छुड़ाया और शकुंतला को पहचानने से इंकार करके उसे लौटा दिया। शकुंतला ने अपना पुरुषार्थ जगाया। उसके बिना पति के ही पहले की तरह ऋषि आश्रम में निर्वाह किया। उसने एक बच्चे को जन्म दिया जिसका नाम सर्वदमन रखा गया। शकुंतला ने मां का कर्तव्य निर्वहन करते हुए बच्चे को स्वयं इतना सुयोग्य बनाया कि वह सिंह शावकों के साथ खेलता था और अंततः यह बालक चक्रवर्ती भरत के

नाम से प्रख्यात हुआ। कथन है कि भारतवर्ष का नामकरण उसी के कारण हुआ।

इसी तरह लव–कुश का लालन–पालन और प्रशिक्षण माता सीता द्वारा ही हुआ था, जिन्होंने युद्ध में अपने पिता राम और चाचा लक्ष्मण के भी छक्के छुड़ा दिये थे। सम्राट शांतनु की पत्नी गंगा ने अपने सभी पुत्रों को वसु, ब्रह्मचारी, तपस्वी और ज्ञानी बनाया था। भीष्म उनके अंतिम पुत्र थे। वे भी राज्याधिकार से दूर और ब्रह्मचारी ही बने रहे और कौरवों तथा पाण्डवों का मार्गदर्शन करते ब्रह्मज्ञानी बनाया था। भर्तृहरि के भाणजे गोपीचंद को संसार–सुख छोड़कर विश्व कल्याण के लिए तप साधना में प्रवृत होने की प्रेरणा उनकी माता ने ही दी थी। वस्तुतः माताएं ही बालकों में सुसंस्कार भरती और उन्हें सभ्य–सुसंस्कृत बनाती हैं।

2. विलक्षण मेधावी बालक

माता, पिता द्वारा आनुवांशिकी संस्कार के कारण कई महामानव अल्पायु में ही असंभव प्रतीत होने वाली प्रगति कर सकने में सफल हुए हैं। शिवाजी ने 13 वर्ष की आयु में तोरण का किला जीता था। सिकंदर ने 17 वर्ष की आयु में शोरोनियां का युद्ध जीता। अकबर ने 16 वर्ष की आयु में राजगद्दी संभाली और एक विशाल साम्राज्य को बुद्धिमत्तापूर्वक चलाया। अहिल्याबाई ने 18 वर्ष की आयु में राज–काज अपने हाथ में ले लिया था। संत ज्ञानदेव ने 12 वर्ष की आयु में गीता का ज्ञानेश्वरी भाष्य लिखा था। जगद्गुरु शंकराचार्य ने 16 वर्ष की आयु में अनेक शास्त्रार्थ जीते। रवींद्रनाथ टैगोर ने 14 वर्ष की आयु में अनेक शास्त्रार्थ जीते। रवींद्रनाथ टैगोर ने 14 वर्ष की आयु में शेक्सपियर के मैकबैथ नाटक का बंगला अनुवाद किया। बंगाली कवयित्री तारादत्त 18 वर्ष की आयु में विश्व विख्यात हो गई थी। हरींद्र चट्टोपाध्याय का प्रथम नाटक 'अबूहसन' 14 वर्ष की आयु में लिखा गया। सरोजनी नायडू ने 13 वर्ष की आयु में तेरह सौ पंक्तियों की मर्मस्पर्शी कविता लिखकर साहित्य क्षेत्र में चमत्कार उपस्थित कर दिया। इसमें इन विलक्षण मेधा संपन्न बालकों को मिले, आनुवांशिक संस्कारों का महत्व तो है ही, उस तथ्य को भी नकारा नहीं जा सकता, जिसे इनकी पुरुषार्थ–परायणता, लगन एवं प्रतिभा को समुचित पोषण देने वाले वातावरण के रूप में जाना जाता है।

3. स्वावलंबन के संस्कार

एक फ्रांसीसी ने सड़क की पहाड़ी पर बैठे एक गरीब लड़के से जूते की मरम्मत कराई और उसकी गरीबी को देखते हुए उसे एक रुपया दे दिया। लड़के ने बाकी पैसे लौटा दिये और कहा जो मेरा उचित पारिश्रमिक है, वही मुझे लेना चाहिए। मेरी माता ने मुझे सिखाया है कि जितना मैं श्रम करूं, उससे अधिक उसके बदले में न लूं। यही बालक आगे चलकर फ्रांस का राष्ट्रपति दगाल बना। हम नवयुवकों को भी उससे शिक्षा ग्रहण करते हुए महामानव बनने का प्रयास करना चाहिए। हममें अद्भुत शक्ति छुपी है उसे केवल जागृत करने की आवश्यकता है।

4. दर्प का दमन

हमें किसी भी प्रकार का अहंकार या दर्प नहीं करना चाहिए। अपने समय की प्रख्यात लेखिका नारी स्वायंत्रय की हिमायती मेरी स्टो किशोरावस्था में बहुत सुंदर लगती थी। उसकी चर्चा और प्रशंसा भी बहुत होती थी। इस पर उसे अपने रूप लावण्य पर गर्व होने लगा और वह इतरा कर चलने लगी। बात पिता को मालूम हुई, तो उन्होंने बेटी को बुलाकर प्यार से कहा– 'मेरी बच्ची, किशोरावस्था का सौंदर्य प्रकृति की देन है। इस अनुदान पर उसी की प्रशंसा होनी चाहिए। तुम्हें गर्व करना हो तो साठ वर्ष की उम्र में शीशा देखकर करना कि तुम उस प्रकृति की देन को लंबे समय तक अक्षुण्ण रखकर अपनी समझदारी का परिचय दे सकी या नहीं।' इस शिक्षा का परिणाम ही यह था कि अपने अहंकार को गलाकर मेरी स्टो एक समाज सेविका के रूप में विकसित हो सकी।

5. स्वाभिमानी माता

कवि डेनियल निर्धनों को मिलने वाली सुविधाएं स्कूल से लेकर आया। उसकी मां ने कहा– 'वापिस जाओ और इन्कार करके आओ। मैं मेहनत–मजदूरी करती हूं और तुम्हारी फीस तथा पुस्तकें जुटा सकती हूं। यह सुविधा उनके लिए है जो सर्वथा असमर्थ हैं। हमें असमर्थों का हक नहीं मारना चाहिए।'

6. वाणी से संस्कारों की पहचान

बिहार में सिंह बहादुर नाम का एक राजा अपनी राजधानी आनंदपुरी में रहता था। पास में सन्यासियों का एक आश्रम था। एक बार राजदरबारियों ने द्वेषवश राजा से शिकायत की कि इस आश्रम के संयासी पकवान खाकर सोते रहते हैं और कोई तपस्या नहीं करते। राजा ने आश्रम के महंत स्वामी निरालंबानंद को बुलवाया और इस आरोप का जवाब मांगा। महंत जी ने कहा कि मैं कल सवेरे तीन बजे आऊंगा और आप मेरे साथ चलना। आपको स्वतः इस आरोप का जवाब मिल जाएगा। सवेरे महंत जी राजा को, राजदरबारियों के घर पर ले गये और उनके चेहरे पर पानी का छींटा डाला। वे सोते हुए भी चिड़चिड़ा गये और मुख पर पानी डालने वाले को गालियां देने लगे। महंत फिर राजा को उनकी गौशाला में ले गये और सो रहे रखवालों पर भी पानी का छींटा डाला। वे भी चिल्लाने लगे तथा गालियां देते हुए बोले– 'कौन है जो सोने नहीं दे रहे हैं, भागो यहां से।' फिर महंत राजा को अपने आश्रम पर लेकर आये और सोये हुए सन्यासियों के चेहरे पर पानी डाल दिया। सन्यासियों के मुंह से निकला– 'हरि ओऊम्' 'राम–राम' इत्यादि। इससे पता चलता है कि राजदरबारी, गौशाला के रक्षक और सन्यासी के संस्कार किस प्रकार के थे। राजा को अपने प्रश्न का जवाब स्वतः मिल गया था।

शत्रु का लोहा गर्म भले ही हो जाए पर हथोड़ा तो ठंडा रहकर ही काम दे सकता है। – वल्लभ भाई पटेल

CONGRATULATIONS TO ALL

UPSC list of Jat candidates all India Rank wise who gave proud moment to society.

Rank	Name
12	TEJASVI RANA
16	ANUJ MALIK
38	Shailendra Indolia
40	AKSHAY GODARA
46	GAURAV SINGH SOGARWAL
60	RAHUL SINDHU
73	AKASH CHHIKARA
130	SHASHANK CHAUDHARY
152	SURUCHI CHAUDHARY
163	AKANKSHA RANA
231	ADARSH PACHERA
241	VANDITA RANA
243	SUNIL SHOKEEN
258	YASH CHAUDHARY
265	PREETI MALIK
275	ASEEM DALAL
277	ADITI MOR
281	VARUN CHOUDHARY
288	PREETI HOODA
313	SWATI SINGH
318	SMRITI KRISHNIA
320	ARUN SEHRAWAT
325	MITIKA DAHIYA
341	ANKUR RAPARIA
356	AVNEET POONIA
360	GARIMA DAHIYA
369	VIKAS AHLAWAT
370	ASHUTOSH KUMAR SAHU
444	ANKIT PANNU
469	ALEKH DUHAN
514	MANISHA TOMAR
528	NOOPUR CHAUDHARY
568	AMAN LOHAN
599	AKSHAYA BUDANIA

Rank	Name
624	SHEKHAR KUMAR CHAUDHARY
640	AKASH CHOUDHARY
675	AVINASH SAHU
681	VINOD CHOUDHARY
718	DEVENDER SINGH CHAUDHARY
726	GARIMA
745	MAHAVEER RAR
757	SURESH CHOUDHARY
774	SANJAY KUMAR RAV
795	VIKAS KUMAR KHICHAR
851	SHAILESH CHAUDHARY
858	PRADEEP MAHLAWAT
862	SUNITA CHOUDHARY
865	TUSHAR DUDI
896	GUNJAN JAKHAR
901	SUMAN NALA
930	PRAVEEN KASWA
932	RAM RATAN SARAN
942	SANGEETA MAHALA

हमें जिन पर गर्व है

आशीष कुमार सुपुत्र श्री रोहतास सिंह दहिया जाट सभा चण्डीगढ़ के आजीवन सदस्य, मकान नं. AD-16 HMT पिंजौर तथा मूल निवासी सिसाना सोनीपत ने मैथ विषय में JRF पास करके आल इंडिया में 43वां रैंक प्राप्त किया है। जाट सभा, चण्डीगढ़ एवं पंचकूला आशीष कुमार एवं उनके परिवार को इस उपलब्धि पर बधाई देती हैं एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

जिसे धीरज है और जो मेहनत से नहीं घबराता, कामयाबी उसकी दासी है। –स्वामी दयानंद

व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सीमा

– डॉ. भूपसिंह, भिवानी

स्वतंत्रता बहुमूल्य वस्तु है। यह जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। इसके बिना व्यक्ति–समाज–राष्ट्र का जीवन अधूरा–सारहीन उबाने वाला व दमघोटू है। इसको पाने के लिए संघर्ष–परिश्रम करना पड़ता है। मूल्य चुकाना पड़ता है। व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक स्वतंत्रता के साथ हस्तक्षेप सहन नहीं किया जा सकता। स्वतंत्रता प्रत्येक प्रकार की उन्नति के लिए आवश्यक हैं। बहुत सी परिस्थितियों में व्यक्ति कष्ट सहन कर भी स्वतंत्र रहने को वरियता देता है। प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्रता के अधिकार की सराहना व वकालत करता है और हमारे देश के संविधान में भी व्यक्ति को रहने–खाने–कार्य करने–विचारने–कहने आदि की स्वतंत्रता दी हुई है। फिर क्या किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता पर सीमा का कोई औचित्य है? यह एक विचारणीय विषय है। इसको ठीक से समझ लेने की आवश्यकता व्यक्ति–समाज–राष्ट्र और प्रत्येक संस्था जैसे कार्यपालिका–विधायिका–न्यायपालिका को भी है क्योंकि इसको ठीक से समझे बिना अनावश्यक संघर्ष होता है और सभी को कष्ट होता है।

एक राष्ट्र को यह स्वतंत्रता नहीं है कि वह दूसरे राष्ट्र को आधीन कर ले। दूसरे राष्ट्र के संसाधनों की लूट मचाये। दूसरे राष्ट्र के क्रिया–कलापों में अवांछनीय हस्तक्षेप करें। दूसरे राष्ट्र की किसी भी कमजोरी का अनुचित लाभ उठाये अर्थात दूसरे राष्ट्र की उन्नति में बाधा बनने की स्वतंत्रता नहीं है। अब एक राष्ट्र अपने स्वार्थ हित में तर्क क्या देता है यह उसकी स्वार्थ साधना होगी न कि स्वतंत्रता का औचित्य।

एक समाज या एक समुदाय दूसरे समाज या समुदाय पर अपनी सामाजिक–सांस्कृतिक या धार्मिक बातें थोपे यह उसको स्वतंत्रता नहीं है। हां अपनी बातों का तार्किक औचित्य दूसरों के सामने रखने की स्वतंत्रता है। दूसरे समुदाय पर भय–लालच या अन्य किसी मजबूरी या अज्ञानता का लाभ उठा कर अपने पक्ष में करने की स्वतंत्रता नहीं है।

इसी प्रकार किसी व्यक्ति को कुछ भी बोलने, लिखने, कहने, खाने–पीने, रहने, करने, पहनने, संबंध बनाने–बिगाड़ने आदि की स्वतंत्रता नहीं है। इस स्थिति में व्यक्ति व समुदाय को संविधान में बोलने–विचारने–रहने–करने की जो स्वतंत्रता मिली है उसका उपयोग करते समय कार्यपालिका–विधायिका व न्यायपालिका से भी कई बार गलती होती है, इसलिए यह अत्यंत विचारणीय विषय बन जाता है।

तो संविधान प्रदत्त स्वतंत्रता का ठीक उपयोग हो इसकी क्या कसौटी होनी चाहिए इस पर कुछ विचार करें। पहली बात तो यह कि कोई भी कार्य (व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक) यदि दूसरे की उचित उन्नति में बाधा बनता है तो उसको करने की स्वतंत्रता नहीं है। दूसरी बात यह है कि परिवार–समाज–राष्ट्र तक के जीवन को ठीक व व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए कुछ नियम–मर्यादायें बनाई होती हैं, उनका उलंघन करने की स्वतंत्रता नहीं है। तीसरी बात यह है कि किसी नियम–मर्यादा का सतही तौर पर उलंघन न भी हो रहा हो पर उस आचरण से व्यक्ति–परिवार–समाज–राष्ट्र के जीवन में उच्छृंखलता–मर्यादाहीनता–अव्यवस्था फैलाने की संभावना हो वह कार्य करने की भी स्वतंत्रता नहीं है। चौथी बात जो न्यायपालिका भी गलती कर देती है वह है व्यक्तिगत और सामाजिक–राजनैतिक जीवन को पृथक–पृथक देखने की। कुछ कार्यों को जेसे खाने–पीने रहने–ओढ़ने पहनने–संबंध बनाने (विवाह आदि) में न्यायपालिका इन कार्यों को व्यक्तिगत बातें मानकर संविधान में दी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के खाते में डाल कर छूट दे देती है जैसे समलैंगिकता, समगोत्र विवाह, फैशन आदि के मामलों में। यहां मौलिक भूल यह होती है कि व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक–राजनैतिक जीवन को अलग किया ही नहीं जा सकता क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और जब तक मनुष्य सामाजिक प्राणी है तब तक उसका व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन अलग नहीं हो सकते। तो व्यक्तिगत क्रिया–कलाप का सामाजिक जीवन पर क्या प्रभाव आयेगा यह विचारना महत्वपूर्ण है। पांचवी बात जहां न्यायपालिका फिर गलती करती है, वह है कानून को संकीर्ण दृष्टि से देखना अर्थात कानून के मुकाबले परंपरा को नकार देना। मुझे यह कहने में कोई संदेह नहीं है कि परंपरा कानून से जयादा मजबूत होती है। इसका कारण यह है कि परंपरा करोड़ों व्यक्तियों के हजारों वर्षों के अनुभव से बनती है जबकि कानून कुछेक व्यक्तियों की तात्कालिक समझ का परिणाम होता है। हां परंपराओं में आई विकृतियों को अवश्य छोड़ देना चाहिए या सुधार कर लेना चाहिए। यदि किसी परंपरा का ऐतिहासिक, भौगोलिक, मनोवैज्ञानिक या वैज्ञानिक आधार है और वह समाज–परिवार के जीवन को मर्यादित–व्यवस्थित करती है और उसका समाज पर ऋणात्मक प्रभाव नहीं पड़ता तो वह परंपरा किसी भी कानून से ऊपर है। एक बात मैं मीडिया के बारे भी कहना चाहूंगा कि मीडिया भी विवेकपूर्ण बातों को बढ़ावा दें न कि अंधी आधुनिकता या व्यवसायिकता के चक्कर में आकर ठीक–गलत सबकी आलोचना करें। उदाहरण के तौर पर किसी पंचायत ने लड़कियों की फैशन–परस्ती पर या मोबाइल के अनुचित प्रयोग पर आजकल लड़कियों ने नंगेपन को फैशन मान लिया है या एक गांव व एक गोत्र में विवाह करने पर या अश्लील डीजे बजाने पर कोई फैसला ले लिया तो मीडिया खासकर "दैनिक जागरण, समाचार–पत्र उस पंचायत के उचित प्रयास को भी तालिबानी फरमान का नाम देकर हीन भावना से पेश करता है।

अंत में हम महर्षि दयानंद सरस्वती से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं जहां महर्षि अच्छे–बुरे की पहचान देते हैं– अच्छा करने से उत्साह–आनंद, संतुष्टि और बुरा करने से लज्जा–भय–शंका होती है, तो फार्मूला यह हुआ कि अच्छा करने में स्वतंत्रता और बुरा करने की मनाही।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017
RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।